राहुल द्विवेदी स्मित

गीतों के राजकुमार: धीरज श्रीवास्तव

मित्रों साहित्य मानव सभ्यता के आरंभिक चरण से ही अस्तित्व में रहा है, हाँ उसे लिपि बद्ध करने में अवश्य समय लगा होगा। भारतीय दर्शन शास्त्र दुनिया के सबसे प्राचीन साहित्य माने जाते हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि साहित्य का अस्तित्व बहुत पुराना है। समय के साथ साथ साहित्य का स्वरूप बदलता रहा है। यद्यपि हम उसे गद्य साहित्य और पद्य साहित्य दो भागों में बांट कर भी देख सकते हैं। यदि हिन्दी साहित्य की बात करें तो भाषा के विकास के विविध चरणों में हिन्दी साहित्य निरन्तर विकसित होता रहा।

यद्यपि संस्कृत काव्य साहित्य में बाल्मीकि को प्रथम कवि या आदि कवि कहा जाता है किंतु हिन्दी में सरहपा को प्रथम कवि होने का सौभाग्य मिला। हिन्दी काव्य में विविध विधाएँ विकसित होती रहीं किंतु एक विधा जो सम्भवतः मानव सभ्यता के आदि काल से ही अस्तित्व में रही होगी, वह है- गीत। शायद आदि काल में भी मनुष्य जब एकांत में बैठता या विचरण करता होगा, पशुओं को चराने ले जाया करता होगा या किसी की याद में खोता रहा होगा, तो उसने कुछ न कुछ काव्यात्मक अवश्य गुनगुनाया होगा। वही तो थे गीत, जो सहज ही मन से फूटकर अधरों पर आ गए होंगे। गीतों ने भी विकास की लम्बी यात्रा देखी होगी किंतु हृदय, लय और सम्वेदनाओं से उनका सम्बन्ध शाश्वत रहा है।

आधुनिक काल में छायावाद ने गीतों को सर्वाधिक तीव्र बहाव दिया, जब जयशंकर के उपन्यासों में किसी पात्र द्वारा सहसा ही गा दिए जाने वाले गीत आये, तो 'आधुनिक युग की मीरा' महादेवी वर्मा की प्रकृति से निकटता और जीवन में पीड़ाओं की बदली से बरसे गीत भी पाठकों को रसासिक्त कर गये। बदलते समय के साथ बहुत से गीतकारों ने अपनी शैली

में गीतों को जिया।

फिर आया वर्ष 2000 के बाद का तकनीकी युग और कागजों पर सिमटे गीत अचानक सोशल मीडिया के माध्यम से हवा में तैरते हुए जन-जन के हाथों में पहुँच गए। वर्ष 2013 या 14 का समय रहा होगा जब मैं भी सोशल मीडिया पर चलभाष की मदद से जा पहुँचा और पहली बार गीतों का एक बहुत ही रोचक किंतु सरस् स्वरूप अपनी आँखों से देखा।

उन गीतों के सर्जक का नाम धीरज श्रीवास्तव था। जब परिचय तलाशा तो एक अत्यंत गम्भीर मुख मुद्रा का चित्र अचानक चलभाष के मुख पटल पर आलोकित हो उठा। गीत पढ़ने गया तो बस पढ़ता चला गया। गाँव की पृष्ठभूमि से उठे मानवीय सम्वेदनाओं के जीवंत गीत हों या विरह की अग्नि में झुलसे हृदय की वेदना के वाष्पीकृत गीत ; सभी मानव मस्तिष्क को छूते हुए कठोर से कठोर हृदयों को भिगो देने का सामर्थ्य रखते थे। उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जनपद के एक छोटे से गाँव चिताही में जन्मे धीरज श्रीवास्तव जी का बचपन सम्पन्नता में व्यतीत हुआ। बचपन से ही परिवार में साहित्यिक माहौल रहा। अतः बालमन अनायास ही साहित्य की ओर झुक गया। आरम्भिक लेखन गद्य में करते हुए धीरज ने कभी सोचा भी न था कि ये समय का पहिया उन्हें किसी दूसरी ही दुनिया में ले जाने का मन बना चुका है। समय के साथ जीवन में आने वाले विभिन्न बदलावों के थपेड़ों को सहते हुए शरारती, हठी किंतु कुशल राजनीतिज्ञ बनने का सामर्थ्य रखने वाला युवा, क्रिकेट में एक अद्भुत बल्लेबाज अचानक गम्भीर और जिम्मेदार गीतकार बनकर उभरा। गाँव से मनकापुर आईआईटी में आकर बसे धीरज श्रीवास्तव ने ठान लिया था कि उनकी पीड़ाएँ, जीवन की कठिनाइयाँ गद्य में जन-जन तक उतना प्रभावशाली ढंग से नहीं पहुँचेंगी, जितना कविता में। किसी ने कहा भी है-

'वियोगी होगा पहला कवि, विरह से उपजा होगा गान'

वियोगी धीरज श्रीवास्तव भी अब गीतकार बन चुके थे। उनके गीतों में हर मानव मन की

व्यथा साफ देखी जा सकती है।

"हो सके तो माफ करना हाथ जोड़े जा रहा हूँ।

जिंदगी सम्बन्ध तुमसे आज तोड़े जा रहा हूँ।।"

धीरज श्रीवास्तव के गीतों में बदलते हुए समय की आहट का भी बहुत ही सुंदर निरूपण देखने को मिलता है-

"बैठ रमलिया मार रही है झल्लर को मिसकॉल।'

प्रतीकों में लिखे गए गीत ग्रामीण शालीन, सहज और सादगी की सुंदरता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं-

"एक अजूबा हमने देखा आज गाँव के पास।

आसमान से परी उतरकर छील रही थी घास।"

धीरज जी अपने गीतों में सामाजिक विसंगतियों को भी बड़ी सहजता से कह जाते हैं-

"देख गाँव का भ्रष्ट आचरण, कमली चली गयी।"

एक सामान्य से सामान्य पात्र की सम्वेदनाओं को बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि से देखकर उसे समाज के सामने लाने वाले गीतकार हैं धीरज श्रीवास्तव जी-

"फ़टे पाँव, हाथों में छाले

मगर मस्त हैं रिक्शे वाले।"

और बहुत से उदाहरण हैं, सभी का वर्णन कठिन होगा। ऐसे अद्भुत गीतों को सृजित करने वाले धीरज श्रीवास्तव को सम्पूर्ण साहित्य समाज प्यार से 'गीतों का राजकुमार' कहकर पुकारता है। किंतु मेरी दृष्टि में वे गीतों के सम्राट हैं, जो कई तथाकथित गीत ऋषियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ और प्रणम्य हैं।